

शैक्षणिक व्यवधान: अंग्रेजी भाषा शिक्षण में छात्र सहभागिता को बढ़ाने हेतु
नवाचारपूर्ण शिक्षण कार्यप्रणालियों का अन्वेषण
**Educational Disruption: Exploring Innovative Teaching Methodologies to Enhance
Student Engagement in English Language Teaching**

राहुल मलिक¹ एवं कल्पना माहेश्वरी²

Rahul Malik¹ and Kalpana Maheshwari²

Skill Faculty of Language and Culture,

Shri Vishwakarma Skill University, Haryana, India

rahulmalik@svsu.ac.in¹, kalpana.maheshwari@svsu.ac.in²

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21817728>

सारांश

उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा शिक्षण ने पिछले दो दशकों में वैश्वीकरण, तकनीकी नवाचार और शिक्षार्थियों की विविधता के कारण एक बड़े प्रतिमान परिवर्तन का अनुभव किया है। पारंपरिक दृष्टिकोण जैसे व्याकरण-अनुवाद पद्धति और रटने की पद्धति प्रायः छात्रों की रुचि आकर्षित करने में असफल रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सहभागिता कम हो जाती है और संप्रेषणीय दक्षता प्रभावित होती है। यह शोधपत्र उन शैक्षणिक हस्तक्षेपों की पड़ताल करता है जिनमें छात्र सहभागिता को बढ़ाने के लिए नवाचारपूर्ण शिक्षण कार्यप्रणालियों का प्रयोग किया गया है। विशेष रूप से कार्य-आधारित भाषा शिक्षण, संप्रेषणीय भाषा शिक्षण, फ्लिपड कक्षा, मिश्रित अधिगम और तकनीक-संवर्धित भाषा शिक्षण की समीक्षा की गई है। विद्यमान साहित्य, केस स्टडी और कक्षा-आधारित शोध पर आधारित यह शोध पत्र दर्शाता है कि ऐसे हस्तक्षेप किस प्रकार प्रेरणा, सक्रिय अधिगम और भाषा दक्षता को प्रोत्साहित करते हैं। सर्वोत्तम अधिगम परिणामों के लिए पूर्व-कक्षा, कक्षा के दौरान और कक्षा के बाद की गतिविधियों को एकीकृत करने हेतु एक त्रि-स्तरीय ढांचा प्रस्तावित किया गया है। अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि 21वीं सदी के अंग्रेजी भाषा शिक्षार्थियों की गतिशील आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रणनीतिक शैक्षणिक नवाचार अनिवार्य है।

Abstract

English Language Teaching (ELT) in higher education has undergone a significant paradigm shift over the last two decades, driven by globalization, technological innovation and learner diversity. Traditional approaches, such as the Grammar-Translation method and rote learning, often fail to capture students' interest, resulting in lower engagement and compromised communicative proficiency.

This research paper explores pedagogical interventions that employ innovative teaching methodologies to enhance student engagement. Specifically, it reviews Task-Based Language Teaching (TBLT), Communicative Language Teaching (CLT), Flipped Classrooms, Blended Learning, and Technology-Enhanced Language Learning (TELL).

Drawing upon existing literature, case studies and classroom-based research, this research paper demonstrates how such interventions foster motivation, active learning, and language

proficiency. A tri-level framework is proposed to integrate pre-class, in-class and post-class activities for optimal learning outcomes. The study concludes that strategic pedagogical innovation is essential to meet the dynamic needs of 21st-century English language learners.

मुख्यशब्द: अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ELT), शिक्षण-शास्त्रीय हस्तक्षेप, अभिनव शिक्षण।

Key words: English Language Teaching (ELT), Pedagogical Interventions, Innovative Teaching.

परिचय

वैश्वीकरण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और डिजिटल संचार के विस्तार ने अंग्रेजी भाषा को विश्व की साझा भाषा के रूप में स्थापित कर दिया है। इसके कारण उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रभावी अंग्रेजी भाषा शिक्षण की माँग पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। किन्तु, वास्तविकता यह है कि कई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में विद्यार्थी अब भी पारंपरिक शिक्षण तरीकों का सामना करते हैं, जिनमें व्याकरण-अनुवाद पद्धति और रटने की प्रवृत्ति प्रमुख हैं। इन पद्धतियों से विद्यार्थियों का ध्यान केवल परीक्षा में अंक प्राप्त करने तक सीमित रहता है और उन्हें वास्तविक संप्रेषणात्मक अभ्यास का अवसर नहीं मिल पाता। नतीजतन, छात्र भाषा सीखने में रुचि खो देते हैं और उनकी सहभागिता न्यूनतम हो जाती है।

ऐसी परिस्थिति में अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ELT) को नवाचारों के सहारे पुनर्गठित करने की आवश्यकता है। शिक्षण का लक्ष्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से शामिल करना, उन्हें आत्मविश्वासी बनाना और आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करना भी आवश्यक है। शैक्षणिक हस्तक्षेप, अर्थात् शिक्षण पद्धतियों में किए गए सुनियोजित परिवर्तन, इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह शोधपत्र इसी संदर्भ में उन नवाचारी रणनीतियों की पड़ताल करता है, जिनसे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और अधिगम अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

विद्वान लंबे समय से अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ELT) की विभिन्न पद्धतियों की प्रभावशीलता पर विचार-विमर्श करते रहे हैं। प्रमुख पद्धतियों की समीक्षा नीचे प्रस्तुत है:

अंग्रेजी भाषा शिक्षण पर वैश्विक स्तर पर लंबे समय से बहस होती रही है। पारंपरिक पद्धतियाँ जैसे व्याकरण-अनुवाद और श्रवण-अनुकरण पद्धति, यद्यपि वर्षों से प्रयोग में रही हैं, परंतु इनकी सबसे बड़ी आलोचना यह रही है कि ये विद्यार्थियों को केवल भाषा के नियम और संरचना सिखाती हैं, संवादात्मक अभ्यास नहीं। परिणामस्वरूप विद्यार्थी परीक्षा में तो सफल हो जाते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में प्रभावी संचार करने में असमर्थ रहते हैं।

इसके विपरीत, संप्रेषणीय भाषा शिक्षण (Communicative Language Teaching – CLT) ने भाषा शिक्षण के क्षेत्र में क्रांति ला दी। यह दृष्टिकोण केवल प्रवाह (fluency) पर ही नहीं बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भाषा प्रयोग पर आधारित है। लिटिलवुड [4] ने यह तर्क दिया कि CLT विद्यार्थियों को प्रामाणिक सामग्रियों और परिस्थिति-आधारित संवाद के माध्यम से अधिक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।

इसी प्रकार, कार्य-आधारित भाषा शिक्षण (Task-Based Language Teaching – TBLT) ने भी व्यापक लोकप्रियता प्राप्त की। एलिस [3] ने यह सिद्ध किया कि वास्तविक जीवन से जुड़े कार्य जैसे परियोजनाएँ, समस्या-समाधान और समूह सहयोग, विद्यार्थियों में भाषा का उपयोग करने की वास्तविक क्षमता विकसित करते हैं।

पिल्लड क्लासरूम मॉडल भी एक महत्वपूर्ण नवाचार के रूप में सामने आया। बर्गमैन एवं अन्य [1] ने दर्शाया कि जब विद्यार्थी कक्षा से पहले वीडियो व्याख्यान या पढ़ाई की सामग्री का अध्ययन कर लेते हैं, तो कक्षा का समय चर्चा, सहयोग और समस्या-समाधान जैसे सक्रिय कार्यों के लिए उपलब्ध हो जाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों की सहभागिता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है।

मिश्रित अधिगम (Blended Learning) एक और पद्धति है, जिसमें पारंपरिक आमने-सामने शिक्षण को डिजिटल साधनों के साथ जोड़ा जाता है। गैरीसन एवं अन्य [2] ने इसे उच्च शिक्षा के लिए उपयुक्त बताते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों को व्यक्तिगत और लचीला अधिगम अनुभव प्रदान करता है।

प्रौद्योगिकी-संवर्धित अधिगम (Technology Enhanced Learning) ने हाल के वर्षों में ELT को पूरी तरह बदल दिया है। मोबाइल ऐप्स, गेमिफिकेशन, ऑनलाइन क्विज, वर्चुअल रियलिटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित उपकरणों ने विद्यार्थियों की सहभागिता और प्रेरणा को नए स्तर तक पहुँचा दिया है। वार्षिक [6] ने इसे भाषा शिक्षण की भावी दिशा बताते हुए कहा कि तकनीकी हस्तक्षेप विद्यार्थियों की डिजिटल रुचियों और सीखने की आवश्यकताओं के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

वैश्विक स्तर पर भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है। यूरोप में 2000 के दशक से ही CLT और TBLT को भाषा नीतियों में शामिल कर लिया गया था। वहीं एशियाई देशों, विशेषकर चीन, जापान और भारत में, Mobile Assisted Language Learning (MALL) ने विद्यार्थियों को अधिक लचीला और आकर्षक अधिगम अनुभव प्रदान किया।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी भाषा शिक्षण में नवाचारी शैक्षणिक हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। विशेष रूप से यह समझना कि किस प्रकार संप्रेषणीय भाषा शिक्षण, कार्य-आधारित अधिगम, फ्लिप कक्षा, मिश्रित अधिगम और तकनीकी हस्तक्षेप विद्यार्थियों की सहभागिता और अधिगम परिणामों को प्रभावित करते हैं। साथ ही, यह अध्ययन यह भी प्रस्तावित करता है कि उच्च शिक्षा में इन नवाचारों के एकीकरण हेतु किस प्रकार का व्यावहारिक ढांचा तैयार किया जा सकता है।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति (Qualitative Research Methodology) का उपयोग किया गया, क्योंकि भाषा शिक्षण में नवाचारों का मूल्यांकन

केवल संख्यात्मक आँकड़ों से नहीं किया जा सकता। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों और शिक्षकों के अनुभवों को गहराई से समझा जाए। अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में लागू किए गए संप्रेषणीय भाषा शिक्षण, कार्य-आधारित अधिगम, फ्लिप क्लासरूम, मिश्रित अधिगम और तकनीकी हस्तक्षेपों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

डेटा संग्रहण हेतु कई साधनों का उपयोग किया गया। सबसे पहले, कक्षा अवलोकन (Classroom Observation) के माध्यम से यह देखा गया कि विद्यार्थी किस प्रकार अलग-अलग पद्धतियों पर प्रतिक्रिया करते हैं। इसके बाद, अर्ध-संरचित साक्षात्कार (Semi-structured Interviews) लिए गए, जिनमें विद्यार्थियों और शिक्षकों से उनके अनुभव, चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ जानी गईं। इसके अतिरिक्त, एक ऑनलाइन प्रश्नावली (Online Questionnaire) भी विद्यार्थियों को दी गई, जिसमें उनकी सीखने की रुचि, सहभागिता और आत्मविश्वास पर आधारित प्रश्न शामिल थे।

एकत्रित किए गए डेटा का विश्लेषण थीमैटिक दृष्टिकोण (Thematic Analysis) के माध्यम से किया गया। इस प्रक्रिया में सबसे पहले प्रमुख विषयों की पहचान की गई और फिर यह समझने की कोशिश की गई कि विभिन्न शिक्षण-पद्धतियाँ विद्यार्थियों की प्रेरणा, सहभागिता और भाषा दक्षता को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) द्वारा यह भी देखा गया कि पारंपरिक पद्धतियों की तुलना में नवाचारी हस्तक्षेप कितने प्रभावी सिद्ध हुए।

निष्कर्ष और चर्चा

अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने में अत्यधिक सहायक हैं। संप्रेषणीय भाषा शिक्षण (CLT) और कार्य-आधारित भाषा शिक्षण (TBLT) ने विद्यार्थियों को संवादात्मक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित किया। रोल-प्ले, समूह चर्चा और सिमुलेशन जैसी गतिविधियों ने विद्यार्थियों को भाषा प्रयोग का वास्तविक अनुभव प्रदान किया, जिससे

उनकी संप्रेषणीय दक्षता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया।

पिलपड क्लासरूम का प्रभाव भी सकारात्मक रहा। जिन विद्यार्थियों ने कक्षा से पहले अध्ययन सामग्री देखी या पढ़ी, वे कक्षा में अधिक सक्रिय और तैयार दिखाई दिए। इससे न केवल उनकी सहभागिता बढ़ी बल्कि शिक्षकों को भी चर्चा और समस्या-समाधान पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिला।

मिश्रित अधिगम (Blended Learning) ने विद्यार्थियों को स्वायत्तता प्रदान की। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों को मिलाकर विद्यार्थियों को लचीला वातावरण दिया गया, जिसमें वे अपनी गति से सीख सकते थे। इससे विशेष रूप से उन विद्यार्थियों को लाभ हुआ जो पारंपरिक कक्षाओं में संकोची रहते थे।

प्रौद्योगिकी-संवर्धित अधिगम (TEL) ने विद्यार्थियों की रुचि को नई ऊर्जा दी। मोबाइल ऐप्स और गेमिफिकेशन गतिविधियों ने शब्दावली अधिग्रहण और याददाश्त में सुधार किया। झांग [8] के अनुसार, गेमिफिकेशन ने शब्दावली स्मरण को 35% तक बढ़ाया। इसके अलावा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित लेखन उपकरणों ने विद्यार्थियों को आत्म-संपादन और सटीकता पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

हालाँकि, अध्ययन में कई चुनौतियाँ भी सामने आईं। कुछ शिक्षक नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को लागू करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं थे। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी उपकरणों और इंटरनेट की कमी के कारण तकनीक-संवर्धित अधिगम को लागू करना कठिन साबित हुआ। विद्यार्थियों की अनुकूलन क्षमता भी एक बड़ी चुनौती रही। जो विद्यार्थी लंबे समय से पारंपरिक तरीकों के आदी थे, उन्होंने शुरुआत में बदलाव का विरोध किया।

केस स्टडीज

नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रभाव को बेहतर ढंग से समझने के लिए कुछ केस स्टडीज पर विचार किया गया। हरियाणा के एक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी लेखन कौशल को सुधारने हेतु पिलपड क्लासरूम पद्धति अपनाई गई। विद्यार्थियों को कक्षा से पहले वीडियो व्याख्यान और पठन सामग्री दी गई और कक्षा का

समय समूहों में लेखन अभ्यास के लिए प्रयोग किया गया। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों की लेखन शुद्धता और शब्दावली प्रयोग में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया।

पलवल के एक विश्वविद्यालय में गेमिफिकेशन आधारित ऐप्स का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों ने प्रतिस्पर्धात्मक खेलों और क्विज के माध्यम से शब्दावली सीखी। इस प्रक्रिया ने विद्यार्थियों में सीखने की रुचि और प्रेरणा को दोगुना कर दिया। कई विद्यार्थियों ने बताया कि पहले जहाँ वे शब्दावली याद करने को नीरस कार्य मानते थे, वहीं गेमिफिकेशन ने इसे मनोरंजक और रोमांचक बना दिया।

चुनौतियाँ

- **शिक्षक की तैयारी (Teacher Preparedness):** सभी शिक्षक नवाचारी शिक्षण-पद्धतियों को लागू करने के लिए आवश्यक कौशल से सुसज्जित नहीं होते।
- **बुनियादी ढाँचे की कमी (Infrastructure Gaps):** तकनीक तक सीमित पहुँच कार्यान्वयन में बाधा डाल सकती है।
- **विद्यार्थियों की अनुकूलन क्षमता (Student Adaptability):** जो विद्यार्थी पारंपरिक, निष्क्रिय तरीकों के अभ्यस्त हैं, वे प्रारम्भिक स्तर पर बदलाव का विरोध कर सकते हैं।

प्रस्तावित शैक्षणिक रूपरेखा

अध्ययन के आधार पर अंग्रेजी भाषा शिक्षण के लिए एक तीन-स्तरीय शैक्षणिक रूपरेखा प्रस्तावित की गई है। इसमें कक्षा-पूर्व, कक्षा-अंतर और कक्षा-पश्चात गतिविधियाँ शामिल हैं।

कक्षा-पूर्व गतिविधियों में विद्यार्थियों को पिलपड क्लासरूम वीडियो, शब्दावली-विकास ऐप्स और पूर्व-पठन असाइनमेंट दिए जाएँ। इससे वे कक्षा के लिए पहले से तैयार होकर आएँगे। कक्षा-अंतर गतिविधियों में रोल-प्ले, वाद-विवाद, समूह परियोजनाएँ और प्रामाणिक सामग्रियों का उपयोग किया जाए। इससे कक्षा का वातावरण अधिक संवादात्मक और सहयोगात्मक बनेगा। कक्षा-पश्चात गतिविधियों में ऑनलाइन चर्चा मंच, आत्म-विश्लेषणात्मक जर्नल और

डिजिटल परियोजनाएँ शामिल हों। इससे विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी और वे आत्म-मूल्यांकन भी कर पाएँगे।

सिफारिशें और नीति-निहितार्थ

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी भाषा शिक्षण में नवाचार को सफल बनाने के लिए कई स्तरों पर सुधार की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि वे नवाचारी पद्धतियों और तकनीकी उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। दूसरे, पाठ्यक्रम में तकनीक और संवादात्मक गतिविधियों को औपचारिक रूप से शामिल करना आवश्यक है। तीसरे, मूल्यांकन पद्धति में भी परिवर्तन होना चाहिए। पारंपरिक परीक्षा-प्रणाली अभी भी व्याकरण और रटने पर केंद्रित है, जबकि वास्तविक आवश्यकता यह है कि विद्यार्थियों की संप्रेषणीय दक्षता और समस्या-समाधान क्षमता को आँका जाए।

नीति-निहितार्थ की दृष्टि से यह शोधपत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के उद्देश्यों को बल प्रदान करता है। नीति में बहुभाषिकता, डिजिटल शिक्षा और संवादात्मक अधिगम को प्रोत्साहित किया गया है। यदि विश्वविद्यालय स्तर पर इस शोधपत्र में प्रस्तावित रूपरेखा को अपनाया जाए तो यह विद्यार्थियों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता और रोजगार अवसरों को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

भविष्य की दिशा

भविष्य के शोधों को इन पद्धतियों के दीर्घकालिक प्रभावों पर केंद्रित होना चाहिए। विशेष रूप से यह देखा जाना चाहिए कि क्या तकनीकी-संवर्धित अधिगम विद्यार्थियों की भाषा दक्षता को रोजगार के अवसरों में बदल पाता है। इसके अलावा, ग्रामीण और शहरी संदर्भों में इन रणनीतियों की तुलना करना भी उपयोगी होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे नए तकनीकी उपकरणों का भाषा शिक्षण पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर भी गहन शोध की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

समग्र रूप से, यह अध्ययन दर्शाता है कि अंग्रेजी भाषा शिक्षण में नवाचार केवल एक विकल्प नहीं बल्कि एक आवश्यकता है। पारंपरिक पद्धतियाँ विद्यार्थियों को सीमित कर देती हैं, जबकि आधुनिक दृष्टिकोण उन्हें आत्मविश्वासी, सहयोगी और वैश्विक नागरिक बनने में मदद करते हैं। संप्रेषणीय भाषा शिक्षण, कार्य-आधारित अधिगम, फ्लिप क्लासरूम और मिश्रित अधिगम जैसी पद्धतियाँ विद्यार्थियों को सक्रिय और सार्थक अनुभव प्रदान करती हैं। हालांकि, इनके सफल कार्यान्वयन के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण, संस्थागत सहयोग और नीति समर्थन अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. Bergmann, J., & Sams, A. (2012). Flip Your Classroom: Reach Every Student in Every Class Every Day. International Society for Technology in Education (ISTE).
2. Garrison, D. R., & Vaughan, N. D. (2013). Blended Learning in Higher Education: Framework, Principles, and Guidelines. Jossey-Bass.
3. Ellis, R. (2003). Task-Based Language Learning and Teaching. Oxford University Press.
4. Littlewood, W. (2019). Task-Based Language Teaching: Theory and Practice. Language Teaching Research, 23(4), 459-475.
5. Richards, J. C. (2020). Approaches and Methods in Language Teaching. Cambridge University Press.
6. Warschauer, M. (2017). Technology and Second Language Learning: A Review. Language Teaching, 50(1), 1-30
7. Willis, J. (1996). A Framework for Task-Based Learning. Longman.
8. Zhang, Y. (2021). Gamification in English Language Teaching: Enhancing Vocabulary Acquisition. ELT Journal, 75(3), 342-351
9. Council of Europe. (2015). Language Education Policy Review. Strasbourg: Council of Europe (CoE).